उपलब्ध कराता है। यह पद्धति किसानों को अधिक लाभप्रद, स्वस्थ और स्थायी डेरी मॉडल अपनाने हेतु प्रेरित करने में मदद कर रही है।

श्री रथ ने यह बताया कि पिछले 2 वर्षों से देश के 10 से अधिक राज्यों में एनडीडीबी द्वारा विभिन्न दूध संघों एवं उत्पादक कंपनियों के माध्यम से डेरी पशुओं में होने वाली कई बीमारियों की रोकथाम के लिए इस पारंपरिक पशु चिकित्सा को लोकप्रिय बनाया जा रहा है। किसानों के लाभ के लिए इस पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धति (ईवीपी) की विस्तार सामग्री सभी स्थानीय भाषाओं में विकसित की गई है। इसके परिणाम बहुत उत्साहजनक रहे हैं एनडीडीबी ने इसकी जानकारी विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में उपलब्ध कराई है। इस पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धति को अधिक समय तक बरकरार रखने के लिए इन नुस्खों की लगातार आपूर्ति करने की आवश्यकता है ताकि किसानों को इसकी संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई जा सके।

सभी हितधारकों और नीति निर्माताओं ने डेरी उद्योग में इस पारंपरिक पशु चिकित्सा (ईवीएम) को मुख्यधारा में लाने और पशु चिकित्सा विज्ञान में इसकी अहम भूमिका पर विचार-विमर्श किया। प्रो. दर्शन शंकर; डॉ. सी बालाचंद्रन; डॉ एएम ठाकर, अधिष्ठाता, पशु चिकित्सा विज्ञान कॉलेज, आणंद कृषि विश्वविद्यालय; प्रो. पुन्नीयामूर्थी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, वेटरनरी फार्माकोलॉजी एंड टाक्सिकोलॉजी, तनुवास, चेन्नई; डॉ गेटच्यू गेब्रू, अध्यक्ष, इथियोपियाई सोसायटी ऑफ एनिमल प्रोडक्शन, इथियोपिया; डॉ एमएनबी नायर, एमेरिटस प्रोफेसर, टीडीयू, बैंगलोर; डॉ जूलियट डेसीटेकर, इंटीग्रेटिव वेटरनरियन, बेल्जियम वेटरनरी एक्यूपंक्चर सोसाइटी, बेल्जियम; डॉ. सतीश कुमार, प्रो. एवं प्रमुख, वेटरनरी गाईनेकोलॉजी एवं आब्स्टेट्रिक्स विभाग, तनुवास, चेन्नई ने पारंपरिक पशु चिकित्सा (ईवीएम) पर अपने बहुमूल्य अनुभवों को साझा किया।